SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बाल साहित्यः बच्चों के विकास का बहुमुखी आयाम

भारती रजक, Ph.D., वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग
माता गुजरी महिला महाविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
भारती रजक, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/10/2023
Revised on : -----
Accepted on : 04/11/2023
Plagiarism : 06% on 28/10/2023

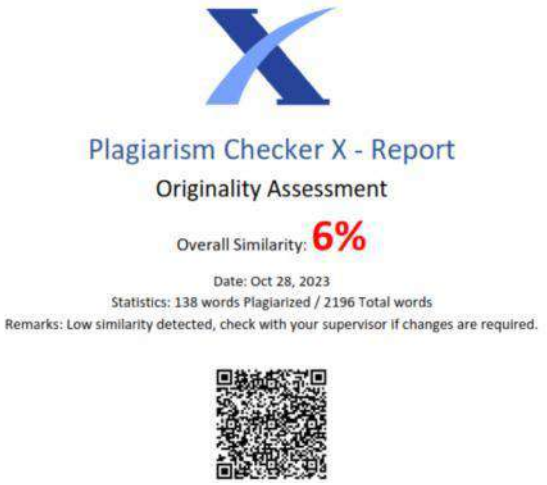

शोध सार

बच्चे के जन्म के बाद से ही बच्चे की कुछ आधारभूत आवश्यकताएं रहती है। आरंभ में तो बच्चे की आवश्यकता भूख तक ही रहती है परंतु जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है तो वह खेल तथा मनोरंजन की ओर बढ़ने लगता है और इस इच्छा में वह अपने मित्रों एवं बाल साहित्य का सहारा लेता है। बाल साहित्य के पृष्ठों को उलटता–पलटता है, रंगों को देखकर खुश होता है चित्रों को देखकर पहचानता है और उसमें दी गयी रचनाओं को समझने की कोशिश करता है। इसी तारतम्य में वह अपने बड़ों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शांत करता है। बालक का संसार ही अनोखा, रंग–बिरंगा होता है। बाल साहित्य की प्राचीनतम पूरी यात्रा में यह बात स्पष्ट रूप से साफ दिखायी देती है कि बाल साहित्य किसी एक डायरी में समाहित होने वाला साहित्य नहीं है अपितु यह इतना व्यापक है जितना आसमान। बाल साहित्य ऐसा साहित्य है जो जो बच्चों की किताबी ज्ञान, पुस्तकों से परे साहित्य है जिसमें कविता का संसार ऐसा होता है, जिसके प्रत्येक शब्द बच्चों के संसार से लिए गये हो और कहानी की सरलता इतनी की बच्चा उसमें आनंदित हो जाए और बच्चों की नयी जिज्ञासा का संसार खोलता है। वर्तमान बाल साहित्य में जहाँ बालकों को अपने देश के प्राचीन इतिहास का ज्ञान कराता है, वहीं वर्तमान से संबंधित बहुमूल्य जानकारी भी प्रदान करता है। कोई भी भाषा की समृद्ध साहित्य परंपरा, बाल साहित्य के बिना पूर्ण नहीं हो सकती। इस साहित्य में रचित साहित्य बच्चों को उनके आसपास के वातावरण की दुनिया से अवगत कराता है, उसके रंग–बिरंगे सपनों को उड़ान देता है।

मुख्य शब्द

बाल साहित्य, संकीर्ण, मनुहार, दृष्टांतपरक, आध्यात्मिक, रचनात्मक.

प्रस्तावना

बालकों के लिए साहित्य की रचना करते समय साहित्यकार भाषा चयन की आवश्यकता के बारे में नहीं सोचता है। उसके सम्मुख तो केवल बच्चों का मासूम चेहरा ही दिखायी देता है, जहाँ पर साहित्यकार अपने हृदय की मधुरता को बालकों के सम्मुख रखना चाहता है। प्रत्येक साहित्यकार जब बाल साहित्य की रचना करता है जो वह अपने बचपन के यादों में से कुछ निकालकर बाल साहित्य में डालकर रचना करता है, क्योंकि बाल साहित्य की रचना करते समय साहित्यकार को बच्चा बनकर ही रहना पड़ता है। बच्चों का संसार ही सतरंगी होता है जहाँ उनका मनुहार, रूठना–मनाना, समर्पण तो रहता ही है साथ ही रहता है खिलखिलाकर हँसना भी समाहित होता है। बाल साहित्य का उल्लेख आते ही चित्रपटल पर एक भोले–भाले, मासूम से, अबोध, निश्छल बालक का चित्र स्वयं ही प्रकट हो जाता है।

स्वातन्त्रय पूर्वकाल में बाल साहित्य का अनंत विस्तार हुआ। एक ओर जहाँ भावानुकूल और बाल मनोविज्ञान को दृष्टि में रखकर बाल साहित्य रचना की गई, वहीं अनेक विधाओं में भी बाल साहित्य रचना हुई। बाल साहित्य के दो प्रमुख उद्देश्य हैं–मनोरंजन और व्यक्तित्व का उन्नयन। तद्युगीन साहित्य ने दोनों जिम्मेदारियों को निभाया। वास्तव में इस युग में जैसे बाल साहित्य के अनंत क्षितिज ही खुल गए थे। बाल साहित्यकार केवल कविताओं, कहानियों, उपन्यासों और नाटकों या निबंधों की ही रचना नहीं कर रहे थे, बल्कि वे बाल पाठक को मानव जीवन से लेकर विश्व जीवन तक की जानकारी दे देना चाहते थे। अन्ततः बाल पाठक भी एक बौद्धिक प्राणी होता है। वह अपने परिवेश की प्रत्येक वस्तु के विषय में जानकारी चाहता है।

बाल साहित्य, साहित्य के विकास के किसी अगले चरण से व्युत्पन्न या विकसित हुआ नहीं माना जाएगा, बल्कि बालक के अस्तित्व के साथ ही बाल–साहित्य का अस्तित्व स्वीकारना होगा। बालक जब इस धरती पर जन्म लेता है तो रोता है, हंसता है, किलकारी भरता है और तोतले बोल बोलता है। क्या बालक के इन क्रिया–कलापों में हमें गीत–संगीत सुनाई नहीं देता? बालक की कीड़ाओ में क्या बाल–साहित्य के दर्शन नहीं होते? यथार्थ में यही बाल–साहित्य का मूल है। बालक की कल्पनाएं अति संकीर्ण होंगी, किन्तु हम निश्चय के साथ यह नहीं कह सकते है कि यही सत्य है। बाल की कल्पनाएँ अति संकीर्ण से लेकर अनंत विश्व और ब्रह्माण्ड तक हो सकती है।

बच्चे और बाल साहित्य का एक अंर्तमन का रिश्ता होता है जिसमें बच्चे को बाल साहित्य में रचित साहित्य से ज्ञान, चित्रों की रंग–बिरंगी दुनियॉ, सपनों को पंख, वास्तविकता का धरातल, संवेदनाओं का संसार, प्रकृति प्रेम और उनकी पीड़ा, मानवता की शिक्षा, संस्कारों का पालन, ऐतिहासिक जानकारी आदि तो प्राप्त होती है साथ ही पढ़ने की प्रवृत्ति का भी विकास होता है, सकारात्मक भाव का विकास होता है।

शोध प्रविधि

शोध पत्र में आलोचनात्मक प्रविधि है शोध पत्र में द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से लिखा गया है जिसमें पुस्तको, इंटरनेट आदि से सामाग्री को प्राप्त किया गया है।

बाल साहित्य, की अवधारणा

बाल साहित्य प्राचीन अवधारणाः प्राचीन काल में जैसे इतिहास की कोई अवधारणा नहीं थी, वैसे ही बाल साहित्य की भी नहीं थी। वस्तुतः भारतीय मनीषियों की इतिहास के प्रति एक अपनी दृष्टि रही है। मौलिक जीवन दर्शन रहा है जिसे उन्होंने भिन्न स्वरूप में देखा है। कला और साहित्य का मूल्याकंन मानव–कल्याण में निहित उपादेयता को देखकर किया गया। ऐसी स्थिति में दृष्टान्तपरक इतिहास पुराण की रचना हुई। वैसे ही बाल साहित्य की भी रचना हुई। पूर्व में बड़ो व बच्चों हेतु साहित्य पृथक नहीं होता था। दोनों की रचना मिली–जुली थी। मध्यकाल में बालक की अलग पहचान बनी। उसके बाल मनोंभावों और उसकी क्रीड़ाओं को महत्ता मिली। यह महत्ता कृष्ण भक्ति–काव्य में विशेष रूप से सूर काव्य में दिखती है।

बाल साहित्य की आधुनिक अवधारणाः आधुनिक काल में भारतीय जनजीवन का स्वरूप ही बदल गया।

विचारों और चिंतन के जगत में परिवर्तन आया। इसी संदर्भ में बालकों को भी आधुनिक ढंग की शिक्षा देने का कार्य प्रारंभ हुआ। बाल पाठ्य पुस्तकों के निर्माण ने बाल प्रकृति को समझकर कहानियॉं, कविताएँ, नाटक और उपन्यास रचने की आवश्यकता समझी गई। बच्चों के महत्व को स्वीकार करते हुए भारत के पूर्व राष्ट्र्पति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है कि बच्चों पर ही हमारा भविष्य निर्भर है और वही हमारी आशा है इसलिए उनकी शिक्षा राष्ट्र के अत्यंत महत्वपूर्ण कर्त्तव्यों में है। आज संसार में बच्चों की मनोवृत्ति और विचारशैली को शिक्षा द्वारा बदलने का प्रयत्न किया जा रहा है। बाल शिक्षा की वृद्धि के साथ–साथ बाल साहित्य की प्रगति की ओर अग्रसर हुआ।

भारतेन्दु युग में मौलिक कहानियों की अपेक्षा अनूदित कहानियों की प्रधानता रही तथा अनुवाद के केन्द्र में नैतिक और धार्मिक भावना थी जिसका मूल उद्देश्य बालकों को अपनी संस्कृति से परिचित कराना था। उदाहरणार्थ पंचतत्र, हितोपदेश, भास कृत बाल चरित्र, कथासरित्सागर जातक कथाएँ, सिंहासन बत्तीसी, शुक–संतति आदि। बाल कहानी के बीज संस्कृत वाड्.मय में दिखायी देते हैं। इनमें कहानियॉं अंकुर के रूप में है। महाभारत, रामायण में अनेक प्रसंग है जो बच्चों के लिए उपयोगी है।

साहित्यकारों की दृष्टि में बाल साहित्य की अवधारणा –बच्चों का संसार सर्वथा अलग होता है। वह नैतिकता, नियम और शासन के बंधनों से मुक्त होते हैं। बच्चों के मन के अनुकूल बातें जिस रचना में हो, वही बाल साहित्य है। द्विवसेदी युग में भी पौराणिक, धार्मिक और राष्ट्रीर्य चेतना से युक्त कहानियाँ लिखी गयी। मुंशी प्रेमचंद, सुभद्राकुमारी चौहान, राजेन्द्रसिंह गौड़ ने बाल मनोविज्ञान पर आधारित बाल कहानियॉं लिखी। कहानी के विषय पर्यावरण, प्रकृति, प्राचीन संस्कृति, विज्ञान आदि के साथ अनेक मनोरंजन प्रधान एवं साहसिक कहानियाँ लिखी। इस युग मे सरस्वती पत्रिका के वीरांक में अनुक महापुरूषों के जीवन पर आधारित वीर रस की कहानियाँ प्रकाशित की गयी। इस युग में कहानी उपदेशात्मकता को छोड़कर मनोवैज्ञानिकता की ओर अग्रसर होने लगी। आधुनिक काल में बाल साहित्य की नयी अवधारणा बनी। कविता, कहानी की दोनों विधाएँ बहुत अधिक विकसित हुयी।

बाल साहित्य की परिभाषा

संस्कृति के विकास और नवजागरण के साथ लोगों ने जागृत चेतना के आलोक में मूल्यांकित किया कि उनके साहित्य का बहुत सा ऐसा अंग बच्चों ने स्वयं ही अपना लिया है। लोककथाएँ और साहसिक यात्रा कथाएँ आदि स्वरूचि अनुकूल पाकर बच्चों ने उन्हें अपनी दुनिया की पाठ्यवस्तु बना लिया। बच्चों की इस स्वाभाविक रूचि ने ही स्वतंत्र बाल–साहित्य रचना की प्रेरणा दी।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे जो साहित्य बच्चों की रूचि के अनुकूल सरल भाषा में लिखा गया हो और जो बच्चों की ज्ञान सीमा को विस्तारित करते हुए उनकी ज्ञान पिपासा को शांत करता हो, वह साहित्य बाल साहित्य कहलाता है।

डॉ. कृष्णचंद्र (राष्ट्रबंधु) उपदेशात्मकता से बोझिल न होकर बड़ों–के लिए निष्प्रयोजन किन्तु बच्चों के लिए रूचिकर हो वह साहित्य बाल साहित्य होता है।

जयप्रकाश भारती बालक की समस्याओं पर लिखना या किसी कला में बालक–बालिका को पात्र बना लेने से बाल साहित्य नहीं लिखा जाता। बालक की मानसिकता को ध्यान में रखकर उसके पढ़ने के लिए उसके मनोरंजन एवं विकास के लिए जो लिखा जाता है, वही बाल साहित्य होता है।

डॉ. श्रीप्रसाद वह समस्त साहित्य जिसमें बाल साहित्य के तत्व हैं अथवा जिसे बालकों ने पसंद किया है भले ही उसकी रचना मूलतः बालकों के लिए न हुई हो तो भी वह बाल साहित्य है।

हेनरी स्टील बच्चों ने जिसे अपना लिया वही बाल साहित्य है। रूसी साहित्य में पौराणिक कथाओं को कोई महत्व नहीं है।

स्मिथ सारा साहित्य बाल साहित्य नहीं है सरल सीधे–साधे शब्दों में हम जो भी उन्हें दे दे वही बाल साहित्य हो जाएगा।

बाल साहित्यः बच्चों के विकास का बहुमुखी आयाम

बाल साहित्य एक ऐसा क्षेत्र होता है जहाँ पर बच्चों के लिए ही साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखा गया जिसमें लिखी गयी कहानियाँ, नाटक, कविताएं, और अन्य साहित्यिक रचनाएं शामिल होती है। बाल साहित्य के बहुमुखी आयाम यानी कि उसके विविध पहलू या आयाम इस प्रकार हैः

1. **मनोरंजनः** बाल साहित्य का प्रमुख उद्देश्य ही बच्चों को मनोरंजन करना होता है। बाल साहित्य में रचित साहित्य में कहानियॉं, चुटकले, मस्ती भरी कविताएँ बच्चों का भरपूर मनोंरंजन करती है। मनोरंजन से भरपूर बाल साहित्य बच्चों की रंग–बिरंगी दुनिया से परिचित कराता है।
2. **शिक्षात्मक आयामः** बाल साहित्य का दूसरा उद्देश्य बच्चों का शिक्षात्मक विकास करना है जिसमें बच्चों को विभिन्न विषयों से संबंधित ज्ञान प्रदान किया जाता है। इसमें बच्चों को सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक ज्ञान को बचपन से जानने का प्रयास होता है। बाल साहित्य में बच्चों के लिए ज्ञान को बढ़ाने के विभिन्न माध्यम होते है। परिचित शब्दों और वाक्यांशों की पहचान करना सीखता है। बच्चे पूर्वानुमान लगाने और विभिन्न शब्दों को उपयोग करने, उनकी व्याख्या करने के लिए चित्रों का उपयोग करना सीखता है।
3. **बच्चों की शब्दावली को समद्ध बनानाः** बाल साहित्य एक ऐसा साहित्य होता है जों बच्चों की शब्दावली को समृद्ध बनाता है जहॉं छोटे–छोटे शब्द, छोटे–छोटे वाक्यों में गुंथे होते है बच्चों के वातावरण से लिए होते हैं। व्याकरण आधारित भी होते है। जहॉं एक ओर ये शब्द बच्चों को ज्ञान प्रदान करते है शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करते है वहीं दूसरी तरळ प्रकृति संबंधी शब्द, बच्चों को अनायास ही प्रकृति से परिचित कराते है। बाल साहित्य के द्वारा बच्चों का शब्द ज्ञान भंडार भरता है। कम उम्र के बच्चे भी कविता, कहानी, पहेली समझ सकते हैं। छोटे बच्चे हर शब्द को समझ नहीं सकते है लेकिन वे साहित्य में दी हुयी भाषा के माध्यम से शब्द को आसानी से समझ सकते है।
4. **संचार कौशल को बढ़ानाः** बच्चें जब बाल साहित्य के माध्यम से विभिन्न रचित विधाओं को पढ़ते या सुनते हैं तो वे अपने वातावरण में उन्हीं शब्दों को और वाक्यों को अपनी दिनचर्या में उपयोग में लाने का प्रयास करते है। अपने मित्र समूह में इनका उपयोग करते है इनके माध्यम से वे संचार कौशल में दक्ष होने लगते है। बाल साहित्य में रचित रचनाओं के आधर पर वह कहानी, कविता को दूसरें के सम्मुख बोलने में दक्ष होते है, रंगमंच को भी पहचानने लगते है। अन्य के साथ परस्पर संवाद करने में भी बच्चों के लिए बाल साहित्य महती भूमिका निभाता है। बाल साहित्य में रचित साहित्य छोटे बच्चों को बोलने, गुनगुनाने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। बच्चे सवाल पूछने एवं किसी सवाल का जवाब देने में सक्षम होते है।
5. **समयानुसार जानकारीः** बाल साहित्य बच्चों का अपना साहित्य होता है जिसमें मनोरंजन के साथ–साथ उन्हें उनकी संस्कृति तथा विरासत के प्रति भी जानकारी प्रदान की जाती है। यह ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूक करता है। बाल साहित्य में देश की परंपराएं, संस्कृतियों और लोक कथाओं की जानकारी प्रारंभ से ही बच्चों को जानने को के लिए उपलब्ध हो जाती है।
6. **रचनात्मक विकासः** बच्चों के मानसिक विकास को समझने के लिए बाल साहित्य एक अहम भूमिका निभाता है। शब्दों एवं चित्रों के मध्य दृढ़ संबंध होने से बच्चे साहित्य को समझने की कोशिश करते है। पहेलियों के माध्यम से उनका तर्क ज्ञान बढ़ता है। रंगों के संयोजन से किसी चित्र को पूरा करना, कागज की सहायता से किसी वस्तु का निर्माण करने की कला भी बतायी जाती है जिससे बच्चों का रचनात्मक ज्ञान का विकास होता है। बाल साहित्य में व्यवहारिक रचनाएं भी रहती है जैसे निबंध, पत्र लेखन, रंग भरो आदि होते है।
7. **प्रकृति की स्पष्टताः** बाल साहित्य की रचनाएं बच्चों को प्रकृति से आसानी से परिचित कराती है, क्योंकि ये रचनाएं से ही भरी–पूरी होती है जैसे पेड़–पौधे, सूरज, चॉंद, सितारे, पशु–पक्षी, नदी–तालाब से परिपूर्ण होती है। इन सभी के माध्यम से बच्चे प्रकुति से परिचित होते है। प्रकृति के साथ वे अपना तालमेल बैठाते है, प्रकृति को जानने को उत्सुक होते है।

8. **नैतिकता की शिक्षाः** बाल साहित्य की रचनाएँ प्रायः नैतिकता पर आधारित होती है जिसमें कहानियॉ अधिकांशतः सीखने और क्षमा पर आधारित होती है, सुधारने पर बल देती है। कहानी, कविता, नाटक, प्रेरक प्रसंग बच्चों को नीति कथाएं, भी होती है जो बच्चों के मानसिक विकास को उन्नत करती है साथ ही साथ सामाजिक मूल्यों की जानकारी देती है, संस्कारों को परिभाषित करती है, मानव मूल्यों को सिखलाती है।
9. **रंगमंच से साक्षात्कारः** बाल साहित्य में नाटक और रंगमंच से संबंधित रचनाओं का भी समावेश होता है जिसके द्वारा बच्चों में अभिनय कला, प्रस्तुतीकरण एवं व्यक्तित्व विकास होता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन के आधार पर बाल साहित्य की सीमा अत्यंत विस्तृत हो जाती है। बाल साहित्य के बहुमुखी आयाम प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते है एवं बच्चों को संस्कृति, साहित्य, के प्रति जागरूक करते है। बच्चे अपने जीवन की आशा आकांक्षा, हर्ष, विषाद और समस्याओं का समाधान भी बालक बाल साहित्य में चाहते हैं, नवीन और प्राचीन का समन्वय चाहते हैं तथा ज्ञान के क्षितिजों का भी वे अनंत विस्तार चाहते हैं। वे नये–नये स्थान और नई–नई वस्तुओं को देखने की भी अभिलाषा करते हैं।

संदर्भ सूची

1. श्रीप्रसाद, *हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ क्रं0 12,13,136।
2. जैन अभिनेष कुमार, *हिन्दी–बाल साहित्य प्राचीन और आधुनिक दृष्टि,* नीरज बुक सेंटर दिल्ली पृष्ठ क्रं. 19।
3. सिंह शेषपाल "शेष," *साठोत्तरी हिन्दी बाल–साहित्य,* समय प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ क्रं. 11।
4. https://www.scotbuzz.org/2023/04/bal-sahitya-ka-arth.html
5. https://www.scotbuzz.org/2023/04/bal-sahitya-ka-arth.html

****